शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page – 79–80

प्रेमचंद की कहानियों में अभिव्यक्ति दलित समाज

डॉ. सजिना पी. एस.
एसोसिएट प्रोफेसर - हिंदी विभाग
यूनिवर्सिटी कॉलेज, तिरुवनंतपुरम केरल

Received– 27June - 2026
Accepted-29 June- 2026
Published– 30 June 2026
Corresponding Author-
डॉ. सजिना पी. एस.
एसोसिएट प्रोफेसर - हिंदी विभाग
यूनिवर्सिटी कॉलेज, तिरुवनंतपुरम केरल

DOI-https://doi.org/10.67275/SU.2026.041421

Funding Policy-
'Shodh Utkarsh' is an independent journal and receives no financial support or grant from any public, commercial, or not-for-profit organization.
वित्त पोषण नीति-
'शोध उत्कर्ष' एक स्वतंत्र पत्रिका है। इसे किसी भी सार्वजनिक, वाणिज्यिक या गैर-लाभकारी संगठन से कोई वित्तीय सहायता, अनुदान या फंडिंग प्राप्त नहीं होती है।
Copyright Notice -
© 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC-BY 4.0).
कॉपीराइट सूचना-
© २०२६ लेखक। यह कार्य क्रिएटिव कॉमन्स अ Attribution 4.0 इंटरनेशनल लाइसेंस (CC-BY 4.0) के अंतर्गत लाइसेंस प्राप्त है।

OPEN ACCESS
Shodh Utkarsh
CC-BY 4.0

सारांश- प्रेमचन्द जी हिन्दी के बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार माने जाते हैं। प्रेमचंद जी के अधिकांश रचनाएँ आम आदमी को केन्द्र में रखकर ही लिखी गई हैं। प्रेमचन्दजी ने पीड़ित शोषित-दलित पर होने वाले अत्याचारों के साक्षी रहे हैं। इसलिए उनकी कहानियों में उभरी चिन्तन की भूमि बिलकुल स्वाभाविक और हर युग में प्रासंगिक है। दलित समाज की अभिव्यक्ति प्रेमचंद ने अत्यंत, यथार्थवादी और सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष के रूप में अभिव्यक्त किया है ।प्रेमचंद परिस्थितियों में जनमें एवं विचारों से पोषित कथाकार थे। उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से दलित वर्ग के दुख-दर्द समझाने का प्रयास किया है। 'ठाकुर का कुंआ', 'सदगति', 'कफन', 'गुल्लीडंडा', विध्वंस', 'मुक्तिमार्ग', 'मंदिर', 'मंत्र', इन कहानियों के माध्यम से सदियों से शोषित, अछूत माने जाने वाले वर्ग की नारकीय स्थिति, गरीबी और जातिगत भेदभाव को उजागर किया।
बीजक शब्द- दलित अस्मिता,जाति-प्रथा और छुआछूत, स्त्री के जातिगत शोषण ।

प्रस्तावना-प्रेमचंद की कहानियों में दलित समाज का चित्रण अत्यंत यथार्थवादी और संवेदनशील है। उन्होंने अपनी कहानियों में दलितों के जातिगत भेदभाव, आर्थिक शोषण, बेगार, ऋण और धार्मिक पाखंड को बेबाकी से दिखाया। उनके अधिकांश कहानियों के पात्र भूख और अपमान के बीच जीने को मजबूर हैं, फिर भी उनमें आत्मसम्मान और प्रतिरोध की झलक मिलती है। प्रेमचंद ने दलितों को दया के पात्र नहीं बल्कि संघर्षरत इंसान के रूप में प्रस्तुत किया और यह साबित किया कि सामाजिक बुराइयों की जड़ जाति के साथ-साथ गरीबी और शोषण में भी है। मानवीय गरिमा के उल्लंघन, शारीरिक और मानसिक विह्वलता और अधिकारों से वंचित दलितों की स्थिति व्यक्त करने वाली रचना है 'ठाकुर का कुआँ' ।प्रेमचंद ने इस कहानी के माध्यम से भारतीय जातिप्रथा की सबसे घृणित परंपरा,छुआछूत के कारण तिरस्कार, अपमान और मानवीय अधिकारों से वंचित जीवन जी रहे अछूतों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को अभिव्यक्त किया है। पानी के लिए तरसते अछूत जीवन की वास्तविकता की यह कहानी है। इस कहानी के दलित पात्र है गंगी और जोखू । इनको ठाकुर के कुओं से पानी भरने का अधिकार नहीं है, क्योंकि वे 'अछूत' माने जाते हैं।. गंगी को ठाकुर के कुएं से पानी लेते समय पकड़े जाने का डर बना रहता है। प्रेमचन्द जिन दिनों लगातार इस ज्वलंत विषय पर लिख रहे थे, उन्हीं दिनों गांधी जी ने भी कहा था, "अस्पृश्यता या छुआछूत अगर हिन्दू धर्म में हो तो मुझे कहना पड़ेगा कि उसमें शैतानियत भरी हुई है, धर्म नहीं। पर मेरा दृढ़ विश्वास है कि हिन्दू धर्म में यह सब कुछ नहीं है। जब तक प्रत्येक हिन्दू अपने चमार, भंगी आदि भाइयों को भी अपने सगे भाई की तरह हिंदू न समझेंगे तब तक मैं उन्हें हिन्दू ही नहीं समझेंगा।"

. सद्गति' अभिजात वर्ग की दलित वर्ग के प्रति कुत्सित सोच की यथार्थ कहानी है। इस कहानी के पात्र दुःखी और झुरिया चमार होने के कारण गाँव के ब्राह्मण देवता के द्वारा शोषित एवं अछूत हैं। दुःखी अपनी बिटिया की सगाई का मुहूर्त निकलवाने पण्डित के घर जाता है। वहाँ उसे भूखे पेट बेगार करना पड़ता है। दुःखी पण्डितजी से इतना दब जाता है कि उनका काम करते करते सद्गति को प्राप्त हो जाता है। वर्ण व्यवस्था और अस्पृश्यता के आधार पर दुःखी की बली चढ़ जाती है। चरमसीमा तो तब आती है जब नेमधरम से रहनेवाले ब्राह्मण चमार की खटोली पर न बैठ सकता है और न ही सीधे भरी थाली को स्वीकार सकता है। वहीं ब्राह्मण आँगन में पड़ी दुःखी की लाश के पैर में फँदा डालकर रस्सी को पकड़कर लाश को घसीटते गाँव के बाहर फेंक आता है। इस प्रकार 'सद्गति' कहानी दलित की दुर्गति का द्योतक है। सदगति' भारतीय संस्कृति की उस महान परंपरा पर चोट करती है, जो समाज में जाति और वर्ग वैषम्य के द्वारा विभेद पैदा करती है । यह जातीय और वर्गीय दंश अंततः मनुष्य की जान लेने में भी नहीं हिचकता ।

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page – 79–80

'सदगति' के पाठकों को यह कहानी बेचैनी से भर देती और वह सामाजिक बदलाव के लिए सोचने को मजबूर हो जाता है । पं. घासीराम दुखिया के घर आने वाला थे । दुखिया की पत्नी झुरिया उनके बैठने केलिए उच्च जाति के लोगों के यहाँ से खाट मंगवाना चाहती है । दुखिया इस पर आक्रोशित हो जाता है । उसे पता है कि ठकुरानेवाले नीचे जातीवालों को खाट नहीं देंगें ।" झुरिया कहीं से खटिया न मिल जायेगी? ठकुराने से माँग लेना । दखी- तू तो कभी कभी ऐसी बात कह देती है कि देह जल जाती है । ठकुरानेवाले मुझे खटिया देंगे । आग तो घर से निकलती नहीं,घटिया देंगे । कैथाने में जाकर एक लोटा पानी मांगू तो न मिले । खटिया कौन देगा । हमारे उपले, सेंठे, भूसा लकडी थोडे है कि जो चाहे उठा ले जाय । ले अपनी खटोली धोकर रख दे । गरमी के तो दिन है उनके आते आते सुख जाएगी "

. कफन कहानी सामंती व्यवस्था के अंत का उद्घोष है, समाज द्वारा दबाया हुआ दलित वर्ग जब समाज की आँख में धूल झोंककर उसके नियमों की धज्जियाँ उठाता है। घीसू और माधव इस व्यवस्था से प्रतिशोध लेते प्रतीत होता है। वे खुल कर सामाजिक नियमों की रीति-रिवाजों तथा धार्मिक पाखंडों की धज्जियाँ उड़ाते हैं। गरीबी और शोषण के कारण उत्पन्न अमानवीय संवेदनहीनता, आलस्य और अस्तित्व के संघर्ष को दिखाता है। कफन' के घीसू- माधव कफन के लिए मिले पैसों को शराब तथा पूड़ियाँ खाने में उड़ा देते हैं क्योंकि उन्हें धार्मिक आडम्बर में विश्वास नहीं। इतना ही नहीं वे शोषक वर्ग के प्रति अपना रोष भी प्रकट करते हैं "वह न बैकुण्ठ में जायेगी तो क्या ये मोटे-मोटे लोग जायेंगे जो गरीबों को दोनों हाथों से लूटते हैं।"

. भारतीय समाज में व्याप्त उच्च नीचत्व, जातिगत भेदभाव, और वर्ग-भेद को अभिव्यक्त करने वाली रचना है 'गुल्ली डंडा' । दलित और सवर्ण के बचपन की दोस्ती और बड़े होकर सामाजिक प्रतिष्ठा के कारण उनके संबंधों में आई दूरी के माध्यम से दलितों की दयनीय स्थिति का चित्रण करती है।गुल्ली डंडा' कहानी का मुख्य पात्र थानेदार का बेटा था और उसका मित्र गया एक गरीब दलित था। बचपन में दोनों में म भेद-भाव का अन्तर नहीं था। कथानायक बड़ा होकर इंजीनियर बन गया। वह अपने बाल सखा गया के साथ गुल्ली-डंडा खेलने गया परन्तु अपने मित्र गया के खेल में उसको वह दक्षता नहीं दिखाई दी जो बचपन में थी। उसे लगा कि उसकी अफसरी दोनों के बीच दीवार बन गई थी। गया उसके साथ खेल नहीं रहा था, उसका मन रख रहा था और उसकी हर धाँधली को बिना विरोध किए सहन कर रहा था। उसके पद और प्रतिष्ठा ने दोनों में असमानता का भाव उत्पन्न कर दिया था।

. दलितों के साथ होने वाले दमन, उत्पीड़न, अस्मिता के संघर्ष,सामाजिक भेदभाव का तीखा चित्र 'विध्वंस' और मुक्तिमार्ग नामक रचनाओं में अभिव्यक्त किया है 1 इन कहानियाँ दलितों के विरुद्ध होने वाली अत्याचार तथा सामाजिक बहिष्कार को दर्शाती है 1 कहानी में दलित महिला पर होनेवाले, अत्याचार और शोषण नीति का पर्दाफाश किया है। मुख्य कथा गोंड जाति की भुगनी नारी पात्र है। 'एक दिन उसे जमींदार उदयभान उसे धमकी देते हुए कहता है कि सूर्यास्त के पहले दो टोकरे अनाज भूनकर देने है अन्यथा वह भाड़ को नष्ट कर देगा। जमींदार की धमकी से उसका मन विद्रोह से भर जाता है लेकिन वह कुछ नहीं कर सकती। वह सोचने लगती है कि "मेरे सिर पर भी कोई होता तो क्यों बौछारे सहनी पड़ती। उसके मन में प्रतिरोध की भावना उत्पन्न होती है। 'विध्वंस' केवल अत्याचार का चित्रण नहीं है, बल्कि यह दलितों के भीतर की प्रतिरोध की भावना, आत्म-सम्मान और रूढ़ियों के खिलाफ संघर्ष की चेतना को भी सामने लाता है।

मंत्र' कहानी में दलित समाज का चित्रण उच्च वर्ग द्वारा किए गए अमानवीय शोषण, गरीबी और सामाजिक .व्यवस्था के प्रति उनके असहाय आक्रोश को उजागर करता है। प्रस्तुत कहानी में डॉक्टर चड्ढा के बेटे के जन्मदिन के कारण भोला के बीमार बेटे का इलाज न करना और फिर चड्ढा के बेटे के सांप काटने पर भोला का इलाज करना, उनके नैतिक बोध को व्यक्त करता है। इसमें दलित पात्र को सवर्ण डॉक्टर के सम्मुख असहाय और निचली स्थिति में दिखाया गया है, जो तत्कालीन सामाजिक यथार्थ का जीवंत स्वरुप है।

निष्कर्ष- प्रेमचंद की कहानियों के संदर्भ में देखें तो प्रेमचंद ने दलित समाज की पीड़ा को आँकड़ों में नहीं, जीवन में दिखाया। उन्होंने साबित किया कि साहित्य का काम केवल मनोरंजन नहीं, समाज को बदलना भी है। गांधी से पहले प्रेमचंद ने अपनी कहानियों से दलित को "मानव" का दर्जा दिलाने का काम किया। आज भी उनकी कहानियाँ हमें याद दिलाती हैं कि जब तक समाज में भेदभाव है, तब तक साहित्य की लड़ाई खत्म नहीं हुई है।उनकी कहानियाँ दलित जनजीवन की संवेदनाओं को उसकी यथार्थपरता के साथ सहज ही पाया जा सकता है। उनके साहित्य समाज की ज्वलंत समस्याओं का अंकन है ।आधुनिक दलित आलोचक प्रेमचंद के चित्रण को 'अनुभव' के बजाय 'सहानुभूति' पर आधारित मानते हैं ।हिंदी साहित्य में दलितों को केंद्र में लाने और सामाजिक बुराइयों पर चोट करने में प्रेमचंद का योगदान निर्विवाद रूप से सर्वोपरि है। उन्होंने अपनी कहानियों के द्वारा दलित वर्ग के अस्मिताओं का चित्रण बहुत अधिक जीवंत रूप से हमारे सम्मुख प्रस्तुत किया है ।'ठाकुर का कुआ', 'गुल्लीडंडा', 'सदगति', 'गफन', 'विध्वंस', 'मुक्तिमार्ग', 'मंदिर', 'मंत्र, 'आगा पीछा' इन कहानियों के माध्यम से दलित वर्ग की संवेदना एवं समस्याओं समझने की चेष्टा की है।

******

संदर्भ ग्रंथ

1. प्रेमचन्द, लेख-हमारा कर्त्तव्य, 26 दिसम्बर, 1932, उद्धृत, शाही सदानन्द (संपा), दलित साहित्य की अवधारणा और प्रेमचन्द, पृ.-114, गोरखपुर, 2000।
2. राष्ट्र भाग-2, पृ.-45, राष्ट्रिय संस्कृति संस्थान, नई दिल्ली ।
3. राष्ट्र भाग-2,पृ.-39, राष्ट्रिय संस्कृति संस्थान, नई दिल्ली ।
4. प्रेमचंद, "कफन", सिंह, दिनेश प्रसाद (सं०) (2007), वातायन मीडिया एंड पब्लिकेशंस, पटना-800001, पृ० 54-60
5. प्रेमचंद, मानसरोवर भाग 5, पृष्ठ 154